Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ۭ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ○

(آل عمران:193)

अनुवाद: हे हमारे रब! जिस किसी को तूने आग में डाला,तो निसन्देह उसे तूने अपमानित कर दिया और अत्याचारियों का कोई मददगार नहीं होगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

29 रजब 1446 हिज्री कमरी, 30 सुलह 1404 हिज्री शम्सी, 30 जनवरी 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुत्बः जुमअः

"हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! एक समय था जब मुझे पूरी दुनिया में आपकी शख्सियत, आपके दीन और आपके शहर से सबसे ज़्यादा दुश्मनी थी, लेकिन अब मुझे आपकी शख्सियत, आपका दीन और आपका शहर सबसे ज़्यादा महबूब हैं।"

(सुमामा बिन उसाल)

सरीया क़ुर्ता के हालात और वाक़ियात का तफ़सीली वर्णन

श्रीमान अब्दुल् लतीफ़ ख़ान साहिब ऑफ़ यूके, श्रीमान तैय्यब अहमद साहिब शहीद ऑफ़ राजनपुर हाल रावलपिंडी, प्रिय मुहंद मुईय्यद अबू आवाद साहिब ऑफ़ ग़ज़ा, मौलवी मुहम्मद अयूब बट साहिब दरवेश क़ादियान, श्रीमान डॉ. मसूद अहमद मलिक साहिब ऑफ़ अमेरिका और श्रीमान शब्बीर अहमद लोधी साहिब का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा हाज़िर और ग़ायब।"

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 13 दिसम्बर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

"आज हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत के हवाले से एक सरीया का वर्णन करूंगा, जिसे सरीया कुरता कहा जाता है। यह सरीया 10 मुहर्रम, 6 हिजरी को हुआ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु को 30 सवारों के साथ कुरता की ओर भेजा। कुरता, बनू बकर बिन कुलाब की एक शाखा थी, जो ज़रिया के नज़दीक बकरात नामी जगह पर रहती थी। बकरात मदीना से सात रातों की दूरी पर था। ज़रिया भी बनू कुलाब की एक पुरानी बस्ती थी। प्राचीन रिवायतों के अनुसार, यह मदीना से सात रातों की दूरी पर थी। हालांकि, आज के ज़माने में ये फासले कम हो चुके हैं। एक रिवायत में यह भी है कि ज़रिया मदीना से एक या दो रातों की दूरी पर था।

(अल्-तबक़ातुल् कुबरा, इब्न साद, भाग 2, पृष्ठ 60, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम. ए, पृष्ठ 663-664)

(फरहंग सीरत, पृष्ठ 60, 233, ज़वार अकादमी कराची)

(सबलुल्-हुदावल्-रिशाद,भाग6,पृष्ठ71,दारुलकुतुबइल्मिया,बैरूत)

इस सरीया में शामिल 30 सहाबा में हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत सलमा बिन सलामा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत हारिस बिन खजमा रज़ियल्लाहु अन्हु भी थे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जमाअत को रात में सफर करने और दिन में छुपने का हुक्म दिया। जब यह लोग शरीबा (जो नज्द में एक जगह है) पहुँचे, तो इन्हें कुछ सवारियाँ मिलीं। हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने एक साथी को भेजा ताकि उनसे पूछा जाए कि वे कौन लोग हैं। साथी ने लौटकर बताया कि वे क़बीला मुहारिब के लोग हैं और अपने जानवरों को चराने के लिए छोड़कर पास ही डेरा डाले हुए हैं। मुसलमानों ने उन पर हमला किया, कुछ को क़त्ल कर दिया और बाकी लोग भाग गए।

मुसलमानों ने उनके ऊँटों और बकरियों को हाँक लिया लेकिन औरतों को कुछ नहीं कहा। इसके बाद, वे बनू बकर पर हमला करने के लिए आगे बढ़े। उन्होंने बनू बकर के 10 लोगों को क़त्ल किया और ऊँट व बकरियाँ हाँककर मदीना की तरफ लौट आए।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , भाग 6, पृष्ठ 71, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

(फरहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 217, ज़वार अकादमी कराची)

इस पूरी मुहिम में कुल 150 ऊँट और 3,000 बकरियाँ हाथ लगीं। हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा रज़ियल्लाहु अन्हु 19 रातें मदीना से बाहर रहे और 29 मुहर्रम, 6 हिजरी को मदीना वापस लौटे।

(अल्-तबक़ातुल् -कुबरा, इब्न साद, भाग 2, पृष्ठ 60, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , जिल्द 6, पृष्ठ 71, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

इसकी तफसील में, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुख़्तलिफ़ किताबों और तारीख़ों से जो लिखा है, वह इस तरह है:

अभी 6 हिजरी शुरू ही हुआ था और क़मरी साल के पहले महीने,

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

यानी मुहर्रम की शुरुआती तारीख़ें थीं, जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अहल-ए-नज्द की तरफ़ से ख़तरे की खबरें मिलने लगीं। यह ख़तरा क़बीला कुरता की तरफ़ से था, जो बनू बकर की एक शाखा था और नज्द के इलाक़े में, बस्ती ज़रिया के मुक़ाम पर आबाद था। यह जगह मदीना से सात दिन की दूरी पर स्थित थी। यह खबर पाकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुरंत 30 सवारों का एक हल्का-सा दस्ता अपने एक सहाबी हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु की क़यादत में नज्द की तरफ़ रवाना किया। लेकिन अल्लाह तआला ने काफ़िरों के दिलों में ऐसा रौब पैदा कर दिया कि वे मामूली से मुकाबले के बाद ही भाग खड़े हुए। और हालांकि उस दौर की जंग के तरीक़े के मुताबिक़ यह मौका था कि मुसलमान दुश्मन की औरतों और बच्चों को क़ैद कर सकते थे, क्योंकि दुश्मन उन्हें छोड़कर भाग निकला था, परंतु हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा ने औरतों और बच्चों को कुछ नहीं कहा और सिर्फ़ आम ग़नीमत का सामान, जो ऊँटों और बकरियों पर मुश्तमिल था, लेकर मदीना वापस लौट आए।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए., पृष्ठ 662-663)

यह स्पष्ट हो गया कि जो दुश्मन क़ौम थी, वह मदीना पर हमला करने की योजना बना रही थी। इसी को रोकने के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दस्ता भेजा था। और वहाँ भी यह नरमी दिखाई गई कि औरतों और बच्चों को कुछ नहीं कहा गया।

थुमामा बिन उथाल का क़ैदी बनना और इस्लाम क़बूल करना

इसी मौक़े पर थुमामा बिन उथाल के क़ैद होने और उनके इस्लाम क़बूल करने का वाक़या मिलता है। सरीया कुरता से वापसी पर यह वाक़या पेश आया।

इसकी तफसील में सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में लिखा है:

'इस मुहिम', अर्थात सरीया कुरता, 'की वापसी पर थुमामा बिन उथाल के क़ैद किए जाने का वाक़या पेश आया। यह शख़्स यमामा का रहने वाला था और क़बीला बनू हनीफा का एक बहुत प्रभावशाली सरदार था। यह इस्लाम की दुश्मनी में इस क़दर आगे बढ़ा हुआ था कि हमेशा बेगुनाह मुसलमानों के क़त्ल के दर पर रहता था। यहाँ तक कि एक बार उसने ख़ुद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़त्ल का भी इरादा किया था। जब हज़रत मुहम्मद बिन मसलमा की जमाअत ने थुमामा को क़ैद कर लिया, तो उन्हें पता नहीं था कि यह कौन है। थुमामा ने भी अपनी पहचान छुपाए रखी, क्योंकि वह जानता था कि मैं इस्लाम के ख़िलाफ़ खतरनाक जुर्म कर चुका हूँ। लेकिन उसे यह यक़ीन था कि अगर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुँच गया, तो उनसे मुझे बेहतर सुलूक की उम्मीद है।

मदीना पहुँचने पर, जब थुमामा को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश किया गया, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे देखते ही पहचान लिया और सहाबा से फ़रमाया, 'जानते हो, यह कौन है?' सहाबा ने अनजान होने का इज़हार किया। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने थुमामा के साथ नर्म सुलूक करने का हुक्म दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घरवालों को फ़रमाया कि जो भी खाना तैयार हो, थुमामा के लिए भिजवा दिया जाए। साथ ही, सहाबा से फ़रमाया कि थुमामा को मस्जिद-ए-नब्वी के सहन में एक खंबे के साथ बांध दिया जाए।

"जिससे पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की मंशा यह थी कि आपकी मजलिसें और मुसलमानों की नमाज़ें सुमामा की आँखों के सामने आयोजित हों और उसका दिल इन रूहानी नज़ारों से प्रभावित होकर इस्लाम की ओर झुक जाए।"

उसे इस तरह बाँधा गया था। यह नहीं कि उसे इस तरह बाँधा जाए कि वह प्रभावित न हो और गुस्से में रहे, बल्कि नरमी और आराम से बाँधा गया होगा, जैसे एक कैदी को बाँधा जाता है ताकि वह अपने हाथ-पैर हिला सके।

"इन दिनों में पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) हर सुबह सुमामा के पास जाते, उसका हाल पूछते और यह सवाल करते कि सुमामा! बताओ अब तुम्हारा क्या इरादा है?'' सुमामा जवाब देता, ''हे मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! अगर आप मुझे मार डालें, तो यह आपका हक़ है क्योंकि मुझ पर खून का इल्ज़ाम है। लेकिन अगर आप मुझ पर एहसान करें, तो आप मुझे शुक्रगुज़ार पाएंगे। और अगर आप फिरौती लेना चाहें, तो मैं इसके लिए भी तैयार हूँ।"

तीन दिनों तक यही सवाल-जवाब होता रहा। आख़िरकार, तीसरे दिन पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) से फ़रमाया, ''सुमामा को खोलकर आज़ाद कर दो।'' सहाबा ने तुरंत उसे आज़ाद कर दिया, और सुमामा जल्दी-जल्दी मस्जिद से निकलकर बाहर चला गया। सहाबा ने शायद यह समझा होगा कि अब वह अपने वतन लौट जाएगा। परंतु पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) समझ चुके थे कि सुमामा का दिल फतह हो चुका है।

अब उस पर पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की रूहानी ताक़त का असर हो चुका था। और नतीजा भी यही निकला। आगे लिखा है कि ''वह एक नज़दीकी बाग़ में गया, वहाँ से नहा-धोकर वापस आया और आते ही पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के हाथ पर मुसलमान हो गया। इसके बाद उसने पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से कहा:

''हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! एक समय था जब मुझे पूरी दुनिया में आपकी शख्सियत, आपका दीन और आपका शहर सबसे अधिक नापसंद थे। लेकिन अब मुझे आपकी शख्सियत, आपका दीन और आपका शहर सबसे अधिक प्यारे हैं।''

उस दिन शाम को, जब सुमामा के लिए रोज़ की तरह खाना आया, तो उसने थोड़ा सा खाकर छोड़ दिया। इस पर सहाबा को ताज्जुब हुआ कि सुबह तक तो सुमामा बहुत ज्यादा खाता था।'' यह साबित करता है कि उसे इस तरह क़ैद किया गया था कि वह खा-पी सकता था और उसकी खाने-पीने की खूब ख़ातिरदारी की जाती थी।

बहरहाल, उसने थोड़ा खाया, जबकि पहले वह बहुत ज्यादा खाया करता था और गोया वह पेटू था। लेकिन अब उसने बहुत कम खाया। यह बात पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) तक पहुँची, तो आपने फ़रमाया, ''सुबह तक सुमामा काफिरों की तरह खाता था, और अब उसने मुसलमान की तरह खाया है।'' आपने इस बात की व्याख्या इस तरह की कि ''काफ़िर सात आँतों में खाता है, परंतु मुसलमान सिर्फ एक आँत में खाता है।''

इससे आपकी मंशा यह थी कि जहाँ एक काफिर दुनियावी लज़्ज़तों में डूबा रहता है और उसी में खोया रहता है, वहीं एक सच्चा मुसलमान अपनी जस्मानी ज़रूरतों को केवल उस हद तक सीमित रखता है, जो ज़िंदगी के क़ायम रहने के लिए ज़रूरी हो। क्योंकि उसे असली लज़्ज़त सिर्फ़ दीन में हासिल होती है।

यह भी याद रखना चाहिए कि यहाँ 'सात' का अंक गणनात्मक नहीं है, बल्कि अरबी मुहावरे के अनुसार 'सात' का इस्तेमाल अधिकता और संपूर्णता के लिए किया जाता है। मतलब यह कि एक काफिर दुनियावी लज़्ज़तों में डूबा रहता है और उसकी सारी तवज्जो दुनिया पर होती है। लेकिन एक मोमिन खुद को इनसे रोककर रखता है और ज़रूरत से आगे नहीं बढ़ता, क्योंकि उसकी असली लज़्ज़तों का मैदान अलग होता है।

यह शिक्षा पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की स्वाभाविक प्रवृत्ति और आपके व्यक्तिगत चरित्र का सबसे सच्चा आइना है।

"मुसलमान होने के बाद सुमामा ने पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से अर्ज़ किया, ''हे रसूलुल्लाह! जब आपके लोगों ने मुझे क़ैद किया था, उस समय मैं ख़ाना-ए-काबा के उमरा के लिए जा रहा था। अब मुझे क्या हुक्म है?'' पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें इजाज़त दी और उनके लिए दुआ की। सुमामा मक्का की तरफ रवाना हो गए।

मक्का पहुँचने पर सुमामा ने जोश-ए-ईमान में, अब उनका ईमान पूरी तरह एक नई शक्ल अख़्तियार कर चुका था। जहाँ पहले दुश्मनी थी, अब ईमान का जोश था। मक्का पहुँचकर उन्होंने ''कुरैश के बीच खुलेआम इस्लाम की तबलीग़ शुरू कर दी।

कुरैश ने जब यह देखा, तो उनकी आँखों में गुस्से का खून उतर आया

और उन्होंने सुमामा को पकड़कर मारने का इरादा किया। लेकिन फिर यह सोचकर रुक गए कि सुमामा यमामा के इलाके के सरदार हैं और यमामा के साथ मक्का के गहरे व्यापारिक संबंध हैं। इसलिए उन्होंने सुमामा को गाली-गलौज देकर छोड़ दिया।

लेकिन सुमामा का दिल इस वक़्त बेहद जोश से भरा हुआ था। कुरैश द्वारा पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और उनके सहाबा पर किए गए अत्याचार उनकी आँखों के सामने थे। मक्का से रुख़्सत होते हुए सुमामा ने कुरैश से कहा, ''ख़ुदा की कसम! अब यमामा के इलाके से तुम्हें एक दाना भी अनाज नहीं मिलेगा, जब तक कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) इसकी इजाज़त न दें।''

अपने वतन पहुँचकर सुमामा ने सचमुच मक्का के लिए यमामा के काफिलों की आवाजाही बंद कर दी। चूँकि मक्का की खुराक का बड़ा हिस्सा यमामा से आता था, इस व्यापार के बंद हो जाने से कुरैश मक्का भारी मुश्किल में पड़ गए। ज्यादा वक्त नहीं गुज़रा था कि उन्होंने परेशान होकर पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को खत लिखा। उसमें उन्होंने कहा, ''आप हमेशा सिला-रहमी (रिश्तों को निभाने) का हुक्म देते हैं और हम आपके भाईबंद हैं। हमें इस मुसीबत से निजात दिलाइए।''

कुरैश इस कदर परेशान हो चुके थे कि उन्होंने खत लिखने पर ही बस नहीं किया, बल्कि अपने सरदार अबू सुफ़ियान बिन हरब को भी पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास भेजा। अबू सुफ़ियान ने पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की खिदमत में हाज़िर होकर रो-रोकर अपनी परेशानी बयान की और रहम की गुहार लगाई।

इस पर पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सुमामा बिन उथाल को यह हिदायत भिजवाई कि मक्का के उन काफिलों को, जिनमें मक्का वालों के खाने-पीने का सामान हो, रोका न जाए। इस तरह यह व्यापार दोबारा शुरू हो गया और मक्का वालों को इस मुसीबत से राहत मिली।

यह वाक़या जहां पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की बेनज़ीर शफ़क़त, रहम और माफ़ी का बेहतरीन सबूत है, वहीं यह भी साबित करता है कि शुरुआती दौर में पैगंबर (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कुरैश के काफिलों को रोकने का जो सिलसिला शुरू किया था, उसका मकसद यह नहीं था कि कुरैश को भुखमरी में डालकर तबाह किया जाए। असल मकसद यह था कि मदीना और उसके आसपास के इलाकों को कुरैश के ख़तरे से महफ़ूज़ रखा जाए।

इस वाक़ये से यह भी साबित होता है कि इस्लामी तालीमात के मुताबिक, युद्ध के दुश्मन के मामले में यह पसंदीदा नहीं है कि आम हालात में उसके रसद और ख़ुराक की आपूर्ति को इस हद तक रोक दिया जाए कि वह भूखा मरने लगे।

हाँ, युद्ध सामग्री की आपूर्ति या ज़रूरी सामान के अलावा अन्य चीज़ों की आवाजाही युद्ध की ज़रूरतों के तहत रोकी जा सकती है।'' लेकिन आज की दुनिया में यह अजीब तमाशा है कि जंग के दौरान ग़रीब और मजबूर लोगों तक खाना-पीना भी नहीं पहुँचने दिया जाता। फिर यह बहाना बनाया जाता है कि वहाँ आतंकी थे या कुछ और।

यह तो उन लोगों का काम है जो दुनियावी हैं, लेकिन इस्लाम की तालीम यह नहीं है। ''और अगर ऐसा हो कि दुश्मन मुसलमानों की ख़ुराक की आपूर्ति को रोक दे, तो फिर क़ुरआन की उसूल-ए-तालीम 'जज़ा-ए-सय्यिअतुन सय्यिअतुन मिस्लुहा' के मुताबिक, दुश्मन की इस आपूर्ति को भी रोकना जायज़ होगा।'' अर्थात बुराई का बदला बुराई के बराबर होगा।

"जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, थुमामा बिन उथाल अपने क्षेत्र का एक प्रभावशाली नेता था। उसकी उत्साही प्रचार गतिविधियों के माध्यम से, यमामा के कई लोग इस्लाम में दाखिल हो गए। इसके बाद, जब पैगंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के निधन के करीब और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की खिलाफ़त की शुरुआत में, झूठे नबी मुसैलमा कज्जाब के प्रभाव में आकर यमामा के कई बाशिंदे इस्लाम से फिर गए, तो थुमामा न केवल खुद इस्लाम पर दृढ़ता से कायम रहा, बल्कि अपनी भावपूर्ण कोशिशों से कई लोगों को मुसैलमा के फितने से बचाकर इस्लाम के झंडे के तले एकत्र रखा और मुसैलमा के फितने को मिटाने में अहम योगदान दिया।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 663-666)

यह उस सरिया का पूरा उल्लेख है। आज कुछ मैंने जनाज़े भी पढ़ाने हैं। एक हाज़िर जनाज़ा है।

इस मौके पर हुजूर ने पूछा कि क्या जनाज़ा आ गया है? और जब सकारात्मक जवाब मिला, तो फ़रमाया :

हाज़िर जनाज़ा श्रीमान अब्दुल लतीफ़ खान साहिब का है, जो के क्षेत्रीय अमीर भी रहे हैं। 11 दिसंबर को 85 साल की उम्र में उनका निधन हो गया है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथी हज़रत मोहम्मद ज़हूर खान साहिब पटियालवी रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे और हज़रत डॉक्टर हशमतुल्लाह खान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो , जो हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के चिकित्सक थे, के भतीजे थे। डॉक्टर हशमतुल्लाह खान साहिब हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के चिकित्सक थे।

अब्दुल लतीफ़ खान साहिब यूके जमाअत के शुरुआती सदस्यों में से थे। 55 वर्षों तक उन्हें स्थानीय और केंद्रीय स्तर पर सेवा का मौका मिला। हंसलो जमाअत के पहले सदर रहे। इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर पर सचिव वसाया, सचिव तब्लीग़, सचिव रिश्ता-नाता और क्षेत्रीय अमीर के रूप में सेवाएं दीं।

मरहूम नमाज़-रोज़े के पाबंद थे। अच्छे आचरण के मालिक थे। सहानुभूतिपूर्ण, मिलनसार, खुशमिजाज़, मेहनती, आज्ञाकारी, नेक और सच्चे इंसान थे। खिलाफत के साथ गहरा और मजबूत लगाव था, जो उनके लिए बहुत श्रद्धा का विषय था। जमाअत की सेवा के लिए हर समय तैयार रहते थे। अपने क्षेत्र में बनने वाली सभी मस्जिदों के लिए चंदा इकट्ठा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें तब्लीग़ का भी बहुत शौक था। हंसलो में हिंदुओं और सिखों के साथ अच्छे संबंध थे और हमेशा जमाअत के कार्यक्रमों में उन्हें बड़ी संख्या में लाते थे। मरहूम वसी थे। उनके पीछे दो बेटियां और चार बेटे हैं। उनके बेटे भी जमाअत के कार्यों में लगे हुए हैं। कई पोते-पोतियां, नाती-नातिन हैं। यह अच्छा परिवार है।

अल्लाह तआला उन पर रहमत और मग़फिरत का व्यवहार फ़रमाए और उनकी संतान को भी खिलाफत और जमाअत के साथ वफादारी से जोड़े रखे।

दूसरा ग़ायब जनाज़ा है, जो तैयब अहमद साहिब शहीद, पुत्र मंज़ूर अहमद साहिब राजनपुर, हाल रावलपिंडी का है।

तैयब अहमद साहिब को रावलपिंडी में एक अहमदियत विरोधी ने 5 दिसंबर को कुल्हाड़ी के वार से शहीद कर दिया। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।"

तफ़्सीलात के मुताबिक, तैय्यब अहमद शहीद कुछ दिन पहले राजनपुर से रावलपिंडी अपने भाई ताहिर अहमद क़मर की कारोबारी मदद के सिलसिले में पहुंचे थे। शहीद मरहूम अपने भाई की दुकान पर बैठे थे कि एक व्यक्ति वहां आया और शहीद मरहूम से बहस शुरू कर दी। शहीद ने उस व्यक्ति से कहा कि "आप मुझसे क्यों उलझ रहे हैं? मैं तो यहां मेहमान हूं।" इसके बावजूद हमलावर ने कोई परवाह नहीं की और सिर, गर्दन और पीठ पर कुल्हाड़ी से वार किया, जिससे तैय्यब अहमद साहब मौके पर शहीद हो गए।

ताहिर अहमद क़मर साहब, जो थोड़ा दूर थे, अपने भाई की मदद के लिए वहां पहुंचे तो हमलावर उनके तरफ भी कुल्हाड़ी लेकर बढ़ा। उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचाई। इस वाकये के दौरान हत्यारा लगातार जमाअत विरोधी नारे लगाता रहा और यह भी कहा, "कादियानियो! तुम लोगों से कई बार कहा है कि यह इलाका छोड़ दो।" अंततः वार करके घटना के बाद वह भाग गया। हालांकि, बाद में पुलिस ने हत्यारे को हिरासत में ले लिया। अब देखना यह है कि मामला कहां तक पहुंचता है।

शहीद मरहूम के भाई ताहिर अहमद और परिवार के अन्य सदस्य

कारोबार के सिलसिले में रावलपिंडी में रह रहे हैं। पिछले एक साल में इस परिवार को विरोधी हालात और धमकियों के चलते चार बार कारोबारी जगह बदलनी पड़ी। तीन महीने पहले उन्हें मकान भी खाली करवाना पड़ा। कई बार विरोधियों की ओर से पत्थरबाजी और कारोबारी नुकसान का सामना करना पड़ा। झूठे आरोप लगाकर उनके खिलाफ शिकायतें की गईं, जिस पर

पुलिस की तरफ से भी उन्हें बुलाया गया। इन सभी हालात का उन्होंने बड़े हौसले से मुकाबला किया।

शहीद मरहूम के परिवार में अहमदियत का प्रसार उनके परदादा उमर दीन साहब ऑफ कादियान के जरिए हुआ। शहीद मरहूम के दादा अहमद दीन साहब को मिस्त्री के रूप में मीनारतुल मसीह की तामीर में हिस्सा लेने का सौभाग्य मिला। उन्होंने फ़ुरक़ान बटालियन में भी सेवा करने का मौका पाया। पाकिस्तान बनने के समय हिजरत के दौरान खलीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु के काफिले में भी शामिल थे। पाकिस्तान आकर उन्होंने

बस्ती कंधारा सिंह, ज़िला रहीम यार खान में जमाअत स्थापित की और बतौर सदर जमाअत सेवा का मौका पाया। उन्होंने अहमदिया बेतुल जिक्र की तामीर में भी अहम भूमिका निभाई।

शहीद अपनी बीमारी के कारण पढ़ाई जारी नहीं रख सके, हालांकि पढ़ना-लिखना जानते थे। वह सादा स्वभाव के मालिक थे और खेतीबाड़ी तथा मेहनत-मज़दूरी के कामों से जुड़े थे। वह पांचों वक़्त की नमाज़ और ताहज्जुद के पाबंद थे। घर के सभी लोगों को भी नमाज़ अदा करने की ताकीद करते। उन्हें खिलाफत से गहरा लगाव था और माता-पिता की सेवा में अत्यधिक रुचि रखते थे। रिश्तेदारों के साथ हमदर्दी का जज़्बा उनका खास गुण था।

शहीद के पिता मंज़ूर अहमद साहब ने बताया कि शुरुआती उम्र में एक बार वह बिना ईशा की नमाज़ अदा किए सो गए। उन्होंने सपना देखा कि किसी ने उन्हें सख्ती से उठाया और कहा, "नमाज़ क्यों नहीं अदा की?" इसके बाद शायद ही उन्होंने कभी कोई नमाज़ छोड़ी हो। बल्कि ताहज्जुद अदा करने के पाबंद हो गए।

उनकी पत्नी ग़ज़ाला साहिबा ने बताया कि शादी को पांच-छह साल हो चुके हैं और उन्होंने हमेशा खास तौर पर नमाज़ की पाबंदी की ताकीद की।

महमूद अहमद रंद साहब, जो ज़िला के मुर्बी हैं, कहते हैं कि पहली मुलाकात के दौरान शहीद ने कहा, "मैं जमाअती सेवा के लिए हर वक्त हाज़िर हूं। अगर मेरी जरूरत हो तो मुझे जरूर बताएं।" शहीद मरहूम वाक़फीन-ए-ज़िंदगी से बहुत मोहब्बत रखने वाले, सादगी पसंद और कम बोलने वाले इंसान थे। मस्जिद में आने के बाद वह सुन्नतों की अदायगी के बाद ज़िक्र-ए-इलाही में मशगूल रहते।

मरहूम के परिवार में उनके माता-पिता (मकसूदा बीबी साहिबा), पत्नी ग़ज़ाला साहिबा और दो भाई हैं। उनके एक भाई वक्फ़-ए-जदीद में मौलिम हैं। मरहूम की कोई संतान नहीं थी। उनके परिवार में दो बहनें भी हैं।

अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए और समस्त पीछे रहने वालों को सब्र-ए-जमील अता करे।

दूसरा ग़ायबाना जनाज़ा : अज़ीज़ मोहन्नद मोअय्यद अबू अवाद, ग़ज़ा, फ़लस्तीन।

यह भी एक ड्रोन हमले में 20 साल की उम्र में शहीद हो गए।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

शरीफ औदा साहिब, अमीर काबाबीर, लिखते हैं कि मुहन्नद मोअय्यद अबू औद, 20 वर्षीय शर्मीले, कम बोलने वाला और युद्ध के हालात के बावजूद हमेशा साफ-सुथरे कपड़े पहनने वाला नौजवान था। वह अपने माता-पिता के साथ ग़ज़ा के दक्षिण में खान यूनुस के पास ह्यूमैनिटी फर्स्ट के कैंप में एक तंबू में रहता था और ह्यूमैनिटी फर्स्ट में काम भी करता था। वहां वह लोगों की सेवा करता था, सिर्फ कैंप में रहने तक सीमित नहीं था। ह्यूमैनिटी फर्स्ट वालों का कहना है कि वह उनका बहुत अच्छा कार्यकर्ता था।

उनके परिवार में अहमदियत उनके पिता मोअय्यद साहिब के माध्यम से आई थी, जिन्होंने संभवतः 2009 या 2010 में अपने परिवार समेत बाईअत की थी। मरहूम मुहन्नद को, जैसा कि पहले बताया गया है, ह्यूमैनिटी फर्स्ट की टीम में एक स्वयंसेवक के रूप में सेवा करने का अवसर मिला। वह बहुत सक्रिय सदस्य थे। मुहन्नद अपने परिवार में तकलीफों और जरूरतों को महसूस करता और उन्हें हल करने की कोशिश करता रहता था।

उस क्षेत्र में खाने के लिए कुछ भी नहीं था। इसलिए वहां से कहीं भी खाने का एक कौर मिल जाना किसी नेमत से कम नहींथा। आजकल वहां के हालात बहुत बुरे हैं। इसराइल सरकार ने खाने कीचीजों को वहां पहुंचने पर पाबंदी लगा रखी है। सहायता के ट्रक, जो वहां जाते हैं, उन्हें रोक दिया जाता है।

शहादत से कुछ दिन पहले, मुहन्नद ग़ज़ा के दक्षिण में रफ़ा क्षेत्र में खाने की तलाश में गया। उस क्षेत्र से खाने का सहायता सामान ले जाने वाली गाड़ियां गुजरती हैं, लेकिन अक्सर उन पर हमला कर दिया जाता है या उन्हें लूट लिया जाता है। इसलिए, कुछ नौजवान उस इलाके में जाते हैं कि शायद उन्हें तबाह मलबे में कहीं कुछ खाने का सामान मिल जाए। कभी-कभी वहां मिट्टी में मिला हुआ आटा मिल जाता है। भले ही वह मिट्टी में मिलाहोता है, लेकिन यह भी उनके लिए एक बड़ी नेमत बन जाता है।

मुहन्नद जब एक बार वहां गया, तो उसे अपने परिवार और पड़ोसियों के लिए कुछ आटा मिल गया, जिसे वह घर ले आया। उसकी मां खुश हुईं कि इससे कई लोगों को ज़िंदा रहने में मदद मिलेगी। लेकिन उसके पिता ने डांटा कि वह दोबारा वहां न जाए क्योंकि वहां से सुरक्षित लौटना किसी चमत्कार से कम नहीं है। उन्होंने कहा, "तुम अभी युवा हो और तुम्हें जिंदगी में आगे बहुत कुछ करना है। कुछ किलो आटे के लिए अपनी जान को खतरे में डालना समझदारी नहीं है।"

फिर भी, 3 दिसंबर को वह दो साथियों के साथ खाने की तलाश में वहां चला गया। जब वह उस इलाके में गया, तो उसने एक फ़लस्तीनी भाई की लाश देखी। पास में कुछ आवारा कुत्ते उस लाश को नोच रहे थे। इस नजारे से वे लोग गमज़दा हो गए। अपने असल मकसद को भूलकर उन्होंने लाश को उठाया और एक एम्बुलेंस तक पहुंचाया ताकि इसे सुरक्षित जगह ले जाकर दफनाया जा सके।

इसी दौरान, उन्होंने एक घायल औरत और उसकी बेटी की चीखें सुनीं, जो मदद के लिए पुकार रही थीं। तीनों ने लाश को एम्बुलेंस तक पहुंचाने के बाद स्ट्रेचर लिया और घायल मां-बेटी को लेने वापस गए। वे एक घायल को उठा रहे थे कि तभी इसराइली विमान ने अचानक उन पर मिसाइल दाग दिया। मुहन्नद, उसका एक साथी, और दोनों घायल औरतें मौके पर ही शहीद हो गए, जबकि तीसरा साथी बच गया।

उसने यह दर्दनाक कहानी बयान की। उसने बताया कि जो भी मुहन्नद और उसके साथियों की लाश उठाने गया, वह भी वहीं मारा गया। आखिरकार, उनकी लाशें कल एक अस्पताल से मिलीं।

शहीद के पिता, मोअय्यद साहिब, जमाअत के बहुत ही ईमानदार और विनम्र सदस्य हैं। वह हमेशा जमाअत की सेवा के लिए काम ढूंढते रहते हैं। ह्यूमैनिटी फर्स्ट के कैंप में वह किसी को नमाज़ के लिए तय जगह की सफाई नहीं करने देते, बल्कि खुद सफाई करते हैं। वह हमेशा ईमानदारी और निष्ठा से काम करते हैं।

उनके पिता को भी अहमदियत अपनाने के बाद बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, और क्योंकि वह बड़े साहसी थे, इसलिए वह अक्सर विभिन्न मस्जिदों में जाकर जोर से ऐलान करते थे कि मसीह आ चुका है। अक्सर इस कारण उन्हें मार-पीट का सामना करना पड़ता था। यहां तक कि हज़रत मसीह मौऊद पर विश्वास करने की सजा में स्थानीय सरकार ने उन्हें इहतेराज का आरोप लगाकर कई सप्ताहों तक जेल में रखा, लेकिन वह इन सभी कठिनाइयों में मजबूत रहे। उनका ईमान कभी भी कम नहीं हुआ।

गिरफ्तारी के दौरान एक तफ्तीशी ने उनके कान पर मुक्का मारा, जिसके बाद वह उस कान से कुछ भी सुन नहीं सकते थे। हालांकि शहीद मरहूम के पिता ने भी बड़ी कुर्बानी दी है। इस परिवार ने जमाअत के लिए, अपने ईमान के लिए बड़ी कुर्बानी दी है। अल्लाह तआला उन्हें हर बुराई से बचाए और शहीद मरहूम के दर्जे ऊंचे करे।

अगला जनाज़ा : मौलवी मुहम्मद अयूब बट साहिब दरवेश क़ादियान

का है, जो हाल ही में क़ादियान में सौ साल की उम्र में वफ़ात पा गए।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊनअयूब

बट साहिब ने अपनी एक बयान में लिखा था कि उनकी माता श्रीमती करीम बीबी साहिबा के द्वारा उनके परिवार में अहमदियत आई थी। वह मीरपुर कश्मीर की रहने वाली थीं और उनके एक भाई सैयद अर्शद अली साहिब क़ादियान से तालीम हासिल करके गए थे। उनके प्रचार से उनकी माता ने अहमदियत स्वीकार कर ली। बाद में उनके पिता ने भी बाईअत कर ली।

अयूब बट साहिब दरविश की लिखाई के अनुसार मरहूम ने अपनी जवानी में ख्वाब में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को घोड़े पर सवार देखा। इस ख्वाब की ताबीर उनकी माता साहिबा ने दी कि उन्हें अल्लाह तआला दीन के काम करने की तोफ़ीक़ देगा। 1939 में मौलवी साहिब ने अपनी ज़िन्दगी को वक़्फ़ कर दिया और प्रशासन की तरफ से उन्हें ईरान जाने का हुक्म हुआ। वहाँ पांच साल तक सेवा-ए-दीन बजाते रहे। इसके बाद उन्हें काबुल, अफगानिस्तान जाने का हुक्म हुआ। काबुल जाने के लिए वह क्वेटा में थे, तो अमीर साहिब जमाअत अहमदिया क्वेटा ने कहा कि आपको क़ादियान बुलाया गया है। यह विभाजन का समय था। भारत-पाकिस्तान का विभाजन हो रहा था। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हिजरत करके लाहौर में बसे हुए थे। जब मौलवी साहिब लाहौर पहुंचे, तो उन्हें बताया गया कि क़ादियान जाने के लिए यह आखिरी ट्रक जा रहा है और इसके बाद शायद कोई ट्रक न जा सके, इसलिए आपको क़ादियान जाना चाहिए। वहां पहुंचकर मौलवी साहिब को क़ादियान में विभिन्न स्थानों पर सुरक्षा की ड्यूटी देने का अवसर मिला। फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद की हिदायत पर, जब भारत में तालीम देने के लिए शिक्षकों को भेजा गया था, तो उन्हें भी भेजा गया और वह झांसी, उत्तर प्रदेश भेजे गए।

वहाँ उन्होंने बड़ी अच्छाई से प्रचार किया और हिंदुओं से अच्छे रिश्ते थे। वह कहते हैं, एक बार एक हिंदू गुरु जी बीमार हो गए। उनके शिष्य ने मौलवी साहिब से दवा मांगी। उन्होंने कहा, "ठीक है, सुबह आना।" वह कहते हैं, "मैंने दुआ की और रात को हज़रत मुस्लेह मौऊद को ख्वाब में देखा और उन्होंने अपना दवाइयों का बक्सा खोला और बताया कि यह दवा दे दो।" मौलवी साहिब ने बताया कि जब वह सुबह उठे, तो वह शशी उनके हाथ में थी। फिर उन्होंने गुरु जी को तीन खुराक दी और वह ठीक हो गए।

भारत में विभिन्न स्थानों पर उन्हें सेवा करने का अवसर मिला और इस दौरान उन्होंने मैदान में ही होम्योपैथी की डिग्री भी प्राप्त की। बहुत से खुश-नसीब लोगों को उनके ज़रिए अहमदियत स्वीकार करने की तोफ़ीक़ भी मिली। उनके एक बेटे डॉ. महमूद अहमद बट साहिब और उनकी बहू डॉ. मंजू बट, जो कि वक़फ-ए-जिंदगी हैं, ने घाना में लंबा समय सेवा की है और आजकल नूर अस्पताल क़ादियान में सेवा कर रहे हैं। इसी तरह उनके एक दूसरे बेटे भी अमेरिका में डॉक्टर हैं। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जे ऊंचे करे और उनके बच्चों और नस्ल को भी उनके अच्छे कामों को जारी रखने की तोफ़ीक़ दे।

अगला वर्णन : श्रीमाना डॉ. मसूद अहमद मलिक साहिब का है, जो नायब अमीर जमाअत यूएसए थे। वह भी हाल ही में 86 साल की उम्र में फातिहा हो गए।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन अल्लाह तआला के फज़ल से वह मूसी थे।

वह हज़रत अल्हाज मौलवी मुहम्मद अब्दुल्ला साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो साथी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पड़पोते और मलिक अब्दुर्रहमान साहिब के पोते थे। अल्लाह तआला के फज़ल से वह मोसी थे और सन 2000 में उन्हें फर्ज़ हज अदा करने की भी तोफ़ीक़ मिली। उन्होंने पाकिस्तान से अपनी तालीम पूरी की और फिर अमेरिका चले गए। वहाँ से उन्होंने University of Nebraska से Animal Nutrition में पीएचडी की। इसके बाद विभिन्न जगहों पर नौकरी करते रहे। जमाअती सेवाओं में उन्हें 2013 से लेकर उनकी वफात तक नायब अमीर जमाअत अमेरिका के तौर पर सेवा करने का अवसर मिला। इसके अलावा, विभिन्न जमाअतों में जहां भी रहे, वह अध्यक्ष जमाअत भी रहे। वॉशिंगटन में भी वह अध्यक्ष जमाअत रहे।

"हज़रत खलीफ़तुल मसीह IVरहमहुल्लाह की किताब

Revelation Rationality Knowledge and Truth

के लिए विभिन्न वैज्ञानिक जर्नल्स से संदर्भ ढूंढने के काम में उन्हें अपनी टीम के साथ सेवा का अवसर मिला। हज़रत खलीफ़तुल मसीह IV रहमहुल्लाह ने इस काम में उनसे भी काम लिया था और यह कार्य कुछ वर्षों की अवधि में संपन्न हुआ।

अमीर साहब जमाअत अमेरिका लिखते हैं कि डॉक्टर साहब ने कई दशकों तक जमाअत अमेरिका की पूरे खलूस और वफ़ादारी के साथ सेवा की। वे खलीफ़ा वक्त के आज्ञाकारी और निर्देशों को हमेशा मानने वाले थे। वे जमाअत के निज़ाम को अच्छी तरह समझते थे और उसकी अहमियत को महसूस करते थे। उन्होंने हमेशा निज़ाम-ए-जमाअत के तहत कार्य किया।

उनकी पत्नी फरीदा साहिबा कहती हैं कि मलिक साहिब अपना अधिकतम समय दीनी सेवा में लगाने की कोशिश करते थे। वे हफ्ते में चार दिन दस घंटे की नौकरी करते थे ताकि शुक्रवार, शनिवार और रविवार को पूरे दिन जनरल सेक्रेटरी के दफ्तर में काम कर सकें। नौकरी से लौटकर वे कभी-कभी सीधे मस्जिद चले जाते थे और देर रात तक काम में व्यस्त रहते थे। नाश्ता भी अक्सर गाड़ी में ले जाते थे ताकि समय बच सके और जमाअती काम कर सकें।

जमाअत के धन की सुरक्षा और खर्च करने में भी वे बहुत एहतियात बरतते थे। उन्होंने एक सहयोगी से कहा कि जमाअत में संपन्नता तो आ गई है, लेकिन दर्द से खर्च करना चाहिए। पुराने लोग इस बात का ज्यादा ध्यान रखते थे कि जमाअत के धन का सही उपयोग हो। इस विषय में उन्होंने सभी अधिकारियों को सावधान रहने की नसीहत दी।

उनकी बेटी सारा कहती हैं कि मरहूम को हमने हमेशा जमाअती सेवा में व्यस्त देखा। उन्होंने घर में अपनी मेज के सामने एक बड़ा सा बोर्ड लगा रखा था, जिस पर लिखा था:

What have I done today in the service of my Jama'at?

और मरहूम ने सचमुच हर दिन जमाअत की सेवा में लगाया।

उनके भाई मलिक मुबारक साहिब कहते हैं कि बैतुल् रहमान की तामीर पूरी होने के बाद वे रोज़ाना काम से सीधे मस्जिद आते और देर रात तक जमाअत के कामों में व्यस्त रहते। विशेष रूप से मजलिस-ए-शूरा के दिनों में उनकी ज़िम्मेदारियां बढ़ जाती थीं। कई हफ्तों तक वे जमाअत के कामों में बहुत समय लगाते।

जानने वालों ने लिखा है और यह बात कई लोगों ने कही है कि निज़ाम-ए-जमाअत के लिए उनके दिल में गहरी इज़्ज़त और सम्मान था। उन्होंने अपने बच्चों में भी जमाअत की मोहब्बत पैदा करने की कोशिश की। वे खुद भी तक़वा की राह पर चलते और अपने बच्चों को भी इसकी नसीहत करते। रिश्तेदारों के साथ सुलह-सफाई करना उनका उत्कृष्ट गुण था। ज़रूरतमंदों की हमेशा मदद करते और मरीज़ों की सबसे पहले अयादत करने पहुंचते।

वे बहुत मेहनती, विनम्र, मेहमाननवाज़, और उच्च विद्वता रखने वाले एक सच्चे और वफ़ादार इंसान थे। हर काम को बारीकी और पूरी ज़िम्मेदारी से करते थे। मस्जिद में अधिक से अधिक समय बिताने की कोशिश करते।

अल्लाह तआला उनसे मग़फिरत और रहम का सलूक फ़रमाए, उनके दर्जात बुलंद करे और उनके बच्चों और आने वाली नस्लों को उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

अगला ज़िक्र : श्रीमान शबीर अहमद लोधी साहिब का है, जो मियां मुहम्मद शफी साहिब मरहूम के बेटे थे और हमारे एक मुरब्बी सिलेसीला फर्रुख शबीर लोधी के वालिद थे। उनकी हाल ही में 62 साल की उम्र में वफ़ात हो गई। *इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।*

उनके परिवार में अहमदियत का प्रवेश उनके दादा मियां शहाबुद्दीन साहिब ऑफ लोधी नंगल के ज़रिये हुआ। उन्हें ख़िलाफत-ए-सानिया के शुरुआती दौर में बैअत कर जमाअत में शामिल होने का सौभाग्य मिला।

मरहूम वसीयतकर्ता थे। सबसे बड़े बेटे फर्रुख शबीर लोधी लाइबेरिया में सिलेसीला के मबलिग़ हैं और पिछले कई वर्षों से वहां सेवा कर रहे हैं।

फर्रुख शबीर लोधी अपने वालिद के बारे में लिखते हैं कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से वे तहज्जुदगुज़ार, पांच वक्त की नमाज़ों के पाबंद, और जहां तक मुमकिन हो जमाअत के साथ नमाज़ पढ़ने वाले थे। वे दीन को दुनिया पर तरजीह देने वाले, कुरआन करीम की तिलावत और जमाअती साहित्य के अध्ययन में रुचि रखने वाले थे। वे ख़िलाफत से बेहद मोहब्बत करते थे और नियमित रूप से खुतबात सुनते थे।

मरहूम सदैव जमाअती सेवा के लिए तत्पर रहते। वे वाकफीन से विशेष प्रेम करते, जमाअती अधिकारियों का सम्मान करते और निज़ाम-ए-जमाअत के लिए गहरी ग़ैरत रखते थे। वे मुस्कुराते हुए लोगों की मदद करते और हर समस्या को अल्लाह के सामने रखते। वे दूसरों के दुखों को कम करने की हरसंभव कोशिश करते और कभी भी दिल में किसी के प्रति नाराज़गी नहीं रखते।

उनकी ये बातें केवल बेटे की नहीं हैं, बल्कि दूसरों ने भी इन्हें लिखा है। मरहूम वाकई नेक और अच्छे इंसान थे।"

गुजरांवाला में एक समय ऐसा आया जब कलमा मिटाने की मुहिम शुरू हुई। उस समय हमारी मस्जिद से कलमा मिटाया जाता था और इन्हें यह ज़िम्मेदारी सौंपी गई थी कि हर बार जब कलमा मिटाया जाए, तो आप इसे फिर से लिखें। जब भी कलमा मिटाया जाता, ये तुरंत जाकर दुबारा कलमा लिख देते। उन्होंने उस समय बड़ी हिम्मत और जज़्बे के साथ यह काम किया।

फिर लिखा गया है कि इनकी एक खासियत यह थी कि अगर किसी से कोई तकलीफ़ भी पहुँचती, तो ये कभी पलटकर जवाब नहीं देते थे। बल्कि सब्र और सहनशीलता का प्रदर्शन करते और अपने मामलों को अल्लाह तआला के हवाले कर देते। अपनी दुआओं के ज़रिए अपनी तकलीफ़ों का सामना करते थे।

स्कूल में, जहाँ ये पढ़ाते थे, वहाँ साथियों ने इनकी काफ़ी मुखालफत की। यहाँ तक कि एक छात्र को कुछ साथियों ने उकसाया कि इन्हें गोली मार दो, तो तुम्हें इनाम दिया जाएगा। लेकिन अल्लाह तआला ने हमेशा इन्हें अपनी हिफ़ाज़त में रखा, और ये बड़ी बहादुरी और जज़्बे के साथ वहाँ काम करते रहे।

अल्लाह तआला उनसे मग़फिरत और रहमत का सलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद करे और उनके बच्चों का भी हाफ़िज़ व नासिर हो।

नमाज़ के बाद मैं उनका जनाज़ा पढ़ाऊँगा।

(अल्-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 3 जनवरी 2025, पृष्ठ 2 से 6)

★ ★ ★

हर उस चीज़ से बचो जो धर्म में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल होने के लिए हर उस चीज़ से बचना होगा जो दीन में बुराई और बिद्दत पैदा करने वाली है .. बहुत सी बुराईयाँ हैं जो शादी ब्याह के अवसर पर की जाती हैं और जिनकी देखा देखी दूसरे लोग भी करते हैं। इस तरह समाज में ये बुराईयां जो हैं अपनी जड़ें गहरी करती चली जाती हैं और इस तरह दीन में और निज़ाम में एक बिगाड़ पैदा हो रहा होता है।"

(उद्धृत मशअले-राह, भाग 5 हिस्सा 3 पृष्ठ 153)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

संस्थान

★ ★ ★

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

ख़ुत्बः जुमअः

"मौमिनों की जमाअत एक जान की तरह होती है।
अगर उनमें से कोई किसी काफिर को पनाह दे तो उसकी पनाह का सम्मान करना ज़रूरी है।''

फिर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने ज़ैनब (रज़ियल्लाहु अन्हा) की तरफ़ मुतवज्जा हो कर फ़रमाया :
''जिसे तुमने पनाह दी है, उसे हम भी पनाह देते हैं।'' (सीरत ख़ातमन नबिय्यीन)

सरीया उक्काशा बिन मिहसन, सरीया मुहम्मद बिन मुसलिमा, सरीया हज़रत अबू उबैदा बिन जरा, सरीया ज़ैद बिन हारिसा बनू सुलेम की तरफ़, सरीया ज़ैद बिन हारिसा ईस की तरफ़, ग़ज़वा बनू लहयान और सरीया ज़ैद बिन हारिसा तर्फ़ की तरफ़ समेत सन् 6 हिजरी में पेश आने वाले कुछ ग़ज़वात और सरीया के हालात और वाक़ियात का तफ्सीली वर्णन।

दुनिया के बिगड़ते हुए सियासी हालात और आसमानी आफ़ात के तनाज़ुर में दुआओं की तल्कीन।
बजाहिर इस्लामी दुनिया के खिलाफ उनके इरादे खतरनाक लगते हैं और इस लिहाज से कोई मुल्क भी महफूज़ नहीं है।
पाकिस्तान के लिए भी इस सिलसिले में दुआ किया करें।
ईरान के लिए, बाकी मुल्कों के लिए भी। अल्लाह तआला मुसलमानों को अक़्ल और समझ दे और फ़िर्क़ापरस्ती और हुकूमत की हवस उनके दिलों से खत्म कर दे और ये सब एक हो जाएं।

श्रीमान अमीर हसन मर्डानी साहिब शहीद (मीरपुरख़ास सिंध, पाकिस्तान) और मौलाना अब्दुस्सत्तार रऊफ साहिब (मुबल्लिग़ सिलसिला मलेशिया) का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब।"

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 20 दिसम्बर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

"प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी के पहलू ग़ज़वात और सराया की घटनाओं के संदर्भ में वर्णन किए जा रहे हैं। इस संबंध में सरियह उक़ाशा बिन मिहसन का भी इतिहास में उल्लेख मिलता है। यह सरियह उक़ाशा बिन मिहसन का ग़मर मरज़ूक की ओर है। यह सरियह रबीउल अव्वल 6 हिजरी में हुआ।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 6, पृष्ठ 77, दारुल कुतुब अल्-इल्मियाह, बैरूत)

सीरत खतमुन्नबीयीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि:

"प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने एक मुहाजिर सहाबी उक़ाशा बिन मिहसन रज़ियल्लाहु अन्हु को चालीस मुसलमानों पर अफसर बनाकर कबीला बनी असद के मुक़ाबले के लिए रवाना किया। यह कबीला उस समय एक चश्मे के क़रीब पड़ा हुआ था जिसका नाम ग़मर था, जो मदीना से मक्का की दिशा में कुछ दिनों की दूरी पर स्थित था। उक़ाशा की पार्टी जल्दी-जल्दी सफर करके ग़मर के क़रीब पहुंची ताकि उन्हें शरारत से रोका जा सके।"

जो योजना बना रहे थे, उन्हें उस से रोका जाए।

"तो मालूम हुआ कि कबीले के लोग मुसलमानों की ख़बर पाकर इधर-उधर बिखर गए थे। इस पर उक़ाशा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथी मदीना की ओर लौट आए और कोई लड़ाई नहीं हुई।"

(सीरत खतमुन्नबीयीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, एम.ए., पृष्ठ 666)

इसी तरह सरियह मोहम्मद बिन मस्लमा का उल्लेख मिलता है। यह सरियह रबीउल् सानी 6 हिजरी को पेश आया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत मोहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु को बनू सल्बा और बनू अवाल की तरफ़ भेजा, जो ज़ुल-क़स्सा में रहते थे। और ज़ुल-क़स्सा मदीना से रबज़ा के रास्ते पर चौबीस मील की दूरी पर है।

(अल् तब्कातुल कुब्रा, इब्न सअद, भाग 2,पृष्ठ 65, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बैरूत)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत मोहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु को दस आदमियों के साथ भेजा। यह जत्था रात के समय वहां पहुंचा। उन लोगों ने हज़रत मोहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों को इस हालत में घेर लिया कि वे सो रहे थे, और दुश्मन के सौ आदमी थे। मुसलमानों को उस समय तक पता नहीं चला, जब तक कि दुश्मन ने उनका तीरों से घेरा नहीं कर लिया। हज़रत मोहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु जल्दी से उठे और आपके पास एक कमान थी। आपने अपने साथियों को ज़ोर से आवाज़ दी कि हथियार संभाल लो। वह भी जल्दी से उठे। रात के एक हिस्से तक तीरंदाज़ी होती रही। कुछ समय तक आपस में तीरंदाज़ी हुई। फिर बदुओं ने भालों से हमला करके बाकी सभी को शहीद कर दिया और हज़रत मोहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु घायल होकर गिर पड़े। आपके टखने पर ऐसी चोट लगी कि आप हिल-डुल नहीं सकते थे और उन लोगों ने आपके कपड़े उतार लिए और चले गए। एक मुसलमान का गुज़र शहीदों के पास से हुआ, उसने इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन पढ़ा। जब हज़रत मोहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे सुना तो हरकत की। उसने आपको खाना दिया और आपको सवारी पर बैठाकर मदीना ले आया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 6, पृष्ठ 79, दारुल कुतुब अल-इल्मियाह, बैरूत)

मोहम्मद बिन मस्लमा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथियों की शहादत के ज़िम्मेदार दुश्मनों से बदला लेने के लिए भी एक सरियह का उल्लेख मिलता है।

यह सरीय: हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह कहलाता है। इसकी तफ़सील में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिखा है कि : "आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को जब इन हालात का इल्म हुआ," अर्थात ज़ुल्क़स्सा में मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथियों की शहादत का

इल्म हुआ, "तो आपने अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु, जो क़ुरैश में से थे और कबार सहाबा में शुमार होते थे, मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतेक़ाम के लिए ज़ुलक़स्सा की तरफ रवाना फ़रमाया। और चूंकि इस अरसे में यह भी इत्तिला मौसूल हो चुकी थी कि क़बीला बनू सुलैबा के लोग मदीना के मज़ाफ़ात पर हमला करने का इरादा रखते हैं, इसीलिए आपने अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु की क़यादत में 40 मुस्तअद सहाबा की जमाअत भेजी और हुक्म दिया कि रातों-रात सफर करके सुबह के वक्त वहां तक पहुंच जाएं। अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने तामील-ए-इरशाद में यलगार करके ऐन सुबह की नमाज़ के वक्त उन्हें जा दबोचा। वे इस अचानक हमले से घबरा कर थोड़े से मुकाबले के बाद भाग निकले और करीब की पहाड़ियों में ग़ायब हो गए। अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने माले ग़नीमत पर कब्जा किया और मदीना की तरफ वापस लौट आए। इस मोहिम में जिन दो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु का जिक्र है, अर्थात मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु, वे दोनों कबार सहाबा में से थे। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु अपने ज़ाती औसाफ़ और काबिलियत के अलावा क़त्ल-ए-काब बिन अशरफ यहूदी के हीरो थे, क्योंकि यह मुफ्सिद इन्हीं के हाथ से अपने कैफर किरदार तक पहुंचा था। मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु अंसार के कबीले औस से ताल्लुक रखते थे और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत में उनके खास मोतबर समझे जाते थे। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अक्सर उन्हीं को अपने उमाला की शिकायतों की तहक़ीक़ के लिए भेजा करते थे। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की वफात के बाद जब मुसलमानों में अंदरूनी फितनों का दरवाजा खुला, तो मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी तलवार को एक पत्थर पर तोड़कर अपने हाथ में सिर्फ़ एक छड़ी ले ली। और जब किसी ने इसका सबब पूछा, तो उन्होंने कहा कि "आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से मैंने यही सुना हुआ है कि जब मुसलमानों के अंदर आपसी क़त्ल-ओ-ग़ारत का दरवाजा खुले, तो तुम तलवार को तोड़कर घर में इस तरह दबक कर बैठ जाना, जिस तरह किसी कमरे में उसका फर्श पड़ा होता है।" यह हुक्म ग़ालिबन मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए या इस फितने के लिए खास था, वरना कुछ औक़ात अंदरूनी फितनों का मुकाबला भी एक आला दीनी खिदमत का रंग रखता है। दूसरे सहाबी अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ियल्लाहु अन्हु थे। ये चोटी के सहाबा में से थे और क़ुरैशी थे। इनकी रफ़अत-ए-शान इस से ज़ाहिर है कि आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने इन्हें "अमीन-उल-मिल्लत" का ख़िताब अता फ़रमाया था।

और आँहज़रत (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने जिन दो सहाबा को खिलाफत का अहल समझा था, उनमें से एक ये भी थे। अबू उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के अहद में मरज़-ए-ताऊन से वफ़ात पाकर शहीद हुए।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 668-669)

फिर एक सरीया है। सरिया ज़ैद बिन हारिसा जिसे बनू सुलैम की तरफ भेजा गया इसके बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु लिखते हैं: "रबी-उल-आखिर 6 हिजरी में, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने अपने आज़ाद किए गए ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु की अमारत में कुछ मुस्लिमों को क़बीला बनी सुलैम की तरफ रवाना किया। यह क़बीला उस समय नज्द के इलाके में जमूम नामक स्थान पर आबाद था और एक अरसे से हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के खिलाफ जंग करता आ रहा था। ग़ज़वा-ए-खंदक में भी इस क़बीले ने मुसलमानों के खिलाफ अहम किरदार निभाया था। जब ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथी जमूम पहुंचे, जो मदीना से तकरीबन पचास मील की दूरी पर था, तो उन्होंने उसे खाली पाया। परंतु उन्हें क़बीला मुझैना की एक औरत, हलीमा नामक (जो इस्लाम विरोधियों में से थी), से उस जगह का पता चला जहां उस वक्त क़बीला बनी सुलैम का एक हिस्सा अपने मवेशी चरा रहा था। इस जानकारी का फ़ायदा उठाकर ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस जगह पर हमला किया। अचानक हुए इस हमले से घबरा कर अधिकतर लोग इधर-उधर भागकर बिखर गए, लेकिन कुछ क़ैदी और मवेशी मुसलमानों के हाथ लग गए जिन्हें वे मदीना वापस ले आए। संयोग से, उन क़ैदियों में हलीमा का पति भी शामिल था। हालांकि वह एक जंगी दुश्मन था। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हलीमा की इस मदद के बदले अर्थात जो जानकारी उसने दी थी न केवल हलीमा को बिना किसी फ़िदिया के रिहा कर दिया बल्कि उसके पति को भी एहसान के तौर पर छोड़ दिया। हलीमा और उसका पति खुशी-खुशी अपने वतन को वापस चले गए।"

(सिरत ख़ातमन नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 669)

सुरिया ज़ैद बिन हारिसा जिसे 'ईस' की तरफ भेजा गया इसकी तफ़सील सिरत ख़ातमन नबिय्यीन में इस तरह बयान हुई है :

"हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जमादुल् ऊला (छ: हिजरी) के महीने में उन्हें अर्थात ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को 170 सहाबा की कमान में फिर मदीना से रवाना किया। इस मुहिम की वजह अहल-ए-सियर (सिरत लिखने वालों) ने यह लिखी है कि शाम की तरफ से क़ुरैश-ए-मक्का का एक काफिला आ रहा था। उसकी रोकथाम के लिए हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इस दस्ते को रवाना किया। क़ुरैश के काफिले हमेशा मुसल्लह (हथियारबंद) होते थे और मक्का और शाम के बीच आते-जाते हुए मदीना के बहुत करीब से गुजरते थे। जिसकी वजह से उनकी तरफ से हर वक्त खतरा रहता था। इसके अलावा, ये काफिले जहां-जहां से गुजरते थे, अरब के क़बीलों को मुसलमानों के खिलाफ उकसाते जाते थे। इस वजह से सारे देश में मुसलमानों के खिलाफ दुश्मनी की एक खतरनाक आग भड़क चुकी थी, इसलिए इनकी रोकथाम ज़रूरी थी। बहरहाल, हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने काफिले की ख़बर पाकर ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को उस तरफ रवाना किया। उन्होंने बड़ी होशियारी से घात लगाते हुए अईस नामक स्थान पर काफिले को दबोच लिया। अईस एक जगह का नाम है जो मदीना से चार दिन की दूरी पर समंदर की ओर स्थित है। चूंकि यह अचानक हमला था, काफिले वाले मुसलमानों के हमले को सहन न कर सके और अपना सामान छोड़कर भाग निकले।

ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने कुछ क़ैदी पकड़ लिए और काफिले का सामान अपने कब्जे में लेकर मदीना की राह ली और हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की खिदमत में पेश हो गए।"

(सिरत ख़ातमन नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 670)

इन घटनाओं में अबू-अल्-आस बिन रबी के कैद होने और इस्लाम स्वीकार करने का भी उल्लेख मिलता है।

इसकी विस्तार से जानकारी इस प्रकार है कि इब्न-इसहाक कहते हैं कि मक्का की विजय से पहले अबू-अल-आस बिन रबी व्यापार के उद्देश्य से अपना माल और क़ुरैश के लोगों का माल लेकर शाम की तरफ निकला। जब व्यापार से फारिग हो गया और काफिले को लेकर वापस लौटा, तो उसे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के एक लश्कर का सामना हुआ। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसके पास मौजूद सारा सामान अपने कब्जे में ले लिया और काफिले के लोगों को क़ैदी बना लिया।

इब्न-साद ने लिखा है कि हज़रत ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस काफिले को, जिसमें अबू-अल-आस भी था, गिरफ्तार किया और उन्हें मदीना ले आए।

इमाम ज़ुहरी और इब्न-उक़्बा के मुताबिक़ अबू-बसीर रज़ियल्लाहु अन्हु, अबू-जंदल रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों ने अबू-अल-आस के इस काफिले से माल पकड़ा और उन्हें क़ैदी बनाया। उनका ठिकाना सैफ़-अल-बहर था। सैफ़-अल-बहर का पहले भी ज़िक्र हो चुका है। यह ऐस के पास समुद्र का किनारा था। इन दोनों ने काफिले वालों में से किसी को भी क़त्ल नहीं किया क्योंकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के साथ अबू-अल-आस का ससुराली रिश्ता था। यह आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दामाद थे। एक रिवायत में है कि अबू-अल-आस सरिया वालों, यानी ज़ैद बिन हारिसा के लश्कर से भाग गया। जब मुसलमान इस काफिले का माल लेकर वापस आ गए, तो अबू-अल-आस रात को मदीना आया और अपनी पत्नी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु बिन्त रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास गया और उनसे पनाह मांगी। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु ने अबू-अल-आस को पनाह दे दी। जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सुबह की नमाज़ पढ़ाई और तकबीर कही, तो लोगों ने भी आपके साथ तकबीर कही। इसी दौरान हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु ने औरतों के लिए बनी जगह (सफ़्फ़त-ए-न्निसा) से ज़ोर

से आवाज़ लगाई। एक रिवायत में है कि उन्होंने अपने दरवाजे पर खड़े होकर ऊंची आवाज़ में कहा, "ऐ लोगों! मैंने अबू-अल-आस को पनाह दी है।"

जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सलाम फेरा, तो आप लोगों की तरफ़ मुख़ातिब हुए और पूछा, "हे लोगों! क्या तुमने वह सुना जो मैंने सुना?" उन्होंने कहा, "हां।" आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा, "मुझे उस ज़ात की क़सम, जिसके हाथ में मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की जान है, मुझे इस बारे में पहले कोई जानकारी नहीं थी। मैंने अभी ज़ैनब से सुना है, वही जो तुमने सुना।"

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा, "मुसलमान अपने दुश्मन के खिलाफ़ एक हाथ हैं। उनका छोटा से छोटा व्यक्ति भी पनाह दे सकता है।"

और एक रिवायत में है कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने कहा, "हमने भी उसे पनाह दी, जिसे ज़ैनब ने पनाह दी।"

इसके बाद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अपने घर में दाखिल हुए। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु भी साथ थीं। उन्होंने अबू-अल-आस से जो सामान छीना गया था, उसे वापस लौटाने का आग्रह किया। आपने इसे स्वीकार किया और कहा, "ऐ बेटी! इसकी अच्छे से मेहमाननवाज़ी करो, लेकिन यह तुम्हारे लिए हलाल नहीं है क्योंकि यह काफिर है और तुम मुसलमान हो।" रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उस सरिया वालों को संदेश भेजा, जिन्होंने अबू-अल-आस का माल लिया था। आपने उनसे कहा, "यह व्यक्ति हमारा अपना है, जैसा कि तुम जानते हो। अर्थात इसका मुझसे रिश्ता है। तुमने इसका माल लिया है। अगर तुम एहसान करते हुए इसका माल लौटा दो, तो यह हमें पसंद है। लेकिन अगर तुम इनकार कर दो, तो यह अल्लाह की दी हुई ग़नीमत है। मुझे इस पर कोई आपत्ति नहीं है। और तुम इसके ज़्यादा हक़दार हो।" तो उन्होंने कहा, "हे रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम)! हम यह माल इसे वापस लौटा देते हैं।"

इब्न अक़बा ने लिखा है कि अबू अल्-आस ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु से उन साथियों के बारे में बात की, जिन्हें अबू बसीर रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू जंदल रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ैद कर लिया था और उनसे माल छीन लिया था। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस बारे में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से बात की। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आए और लोगों से खिताब किया। आपने फ़रमाया: "हमने कुछ लोगों को दामाद बनाया और हमने अबू अल-आस को भी दामाद बनाया। हमने उन्हें एक अच्छा दामाद पाया। वह श्याम (सीरिया) से अपने कुछ कुरैशी साथियों के साथ आ रहा था। अबू जंदल और अबू बसीर ने उन्हें पकड़ लिया, क़ैद कर लिया और उनका सामान छीन लिया, लेकिन उनमें से किसी को क़त्ल नहीं किया। ज़ैनब ने मुझसे कहा कि मैं उन्हें पनाह दूं। क्या तुम अबू अल-आस और उसके साथियों को पनाह देते हो?" लोगों ने कहा, "हाँ।" जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का यह हुक्म अबू जंदल रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथियों तक पहुँचा, तो उन्होंने सभी को आज़ाद कर दिया और उनका सारा सामान लौटा दिया, यहाँ तक कि रस्सी भी लौटा दी। इब्न इशाक़ और मुहम्मद बिन उमर के मुताबिक़, सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनकी हर चीज़ लौटा दी, यहाँ तक कि कोई आदमी डोल लेकर आ रहा था, कोई मश्क, और कोई लोटा। उन्होंने सभी चीजें क़ैदियों समेत वापस कर दीं, और कुछ भी गुम नहीं हुआ। फिर अबू अल-आस माल लेकर मक्का की तरफ चले गए और हर हक़दार को उनका हक़ दे दिया। फिर उन्होंने खड़े होकर मक्का वालों से कहा, "हे मक्का के लोगों! क्या तुममें से किसी का कोई माल मेरे पास बाकी रह गया है, जिसे मैंने नहीं लौटाया हो? ऐ मक्का वालों! क्या मैंने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी?" तो सबने कहा, "हाँ। अल्लाह तआला तुम्हें बेहतर बदला दे। हमने तुम्हें बहुत अच्छा वफादार पाया।"

तब अबू अल-आस ने इस्लाम कबूल करने का एलान करते हुए कहा : "मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह तआला के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। अल्लाह की क़सम! रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास कोई चीज़ मुझे इस्लाम लाने से नहीं रोक रही थी। यानी जब मैं मदीना में था, तब भी इस्लाम ला सकता था, लेकिन मुझे डर था कि तुम ये गुमान करोगे कि मैंने तुम्हारे माल हड़पने का इरादा किया है। जब अल्लाह तआला ने ये माल तुम्हारी तरफ लौटा दिया, जो अमानतें थीं, मैंने तुम्हें वापस कर दीं और मैं उनसे फारिग़ हो गया, तो मैंने इस्लाम कबूल कर लिया।"

इसके बाद वह मदीना आए और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास पहुंचे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 83-84, दारुल-कुतुब अल्-इल्मिया, बेरुत)

(उद्धारित तबकातुल् कुब्रा लेइब्ने साद, खंड 2, पृष्ठ 66-67, दारुल-कुतुब अल्-इल्मिया, बेरुत)

(फ़रहंग-ए-सिरत, पृष्ठ 160, ज़वार अकादमी, कराची)

इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने यूं लिखा है: "उन क़ैदियों में, जिन्हें सरीया ब-तरफ़ ईस में पकड़ा गया, अबू अल-आस बिन रबी भी थे, जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के दामाद थे और हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हु के करीबी रिश्तेदारों में से थे। इससे पहले वह जंग-ए-बदर में भी क़ैद होकर आए थे, परंतु उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें इस शर्त पर छोड़ दिया था कि वह मक्का पहुंचकर आपकी साहिबज़ादी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना भेज देंगे। अबू अल-आस ने इस वादे को पूरा किया, लेकिन वह खुद अभी तक शिर्क पर कायम थे। जब ज़ैद बिन हारिसा उन्हें क़ैद करके मदीना लाए, तो रात का वक़्त था। परंतु किसी तरह अबू अल-आस ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु को इत्तिला भिजवाई कि "मैं इस तरह क़ैद होकर यहां पहुंच गया हूं। तुम अगर मेरे लिए कुछ कर सकती हो तो करो।"

इसलिए उसी समय, जब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) और आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु सुबह की नमाज़ में मशगूल थे, ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु ने घर के अंदर से ऊंची आवाज़ में कहा: "हे मुसलमानो! मैंने अबू अल-आस को पनाह दी है।" रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया: "जो कुछ ज़ैनब ने कहा है, वह आप लोगों ने सुन लिया होगा। वल्लाह! मुझे इसका इल्म नहीं था। परंतु मोमिनों की जमाअत एक जान के हुक्म में है। अगर उनमें से कोई किसी काफिर को पनाह दे, तो उसका इज़्ज़त करना लाज़िम है।" फिर आपने ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु की तरफ़ मुतवज्जेह होकर फ़रमाया ...

"जिसे तुमने पनाह दी है, उसे हम भी पनाह देते हैं।"

जो माल इस मुहिम में अबू अल्-आस से हासिल हुआ था, उसे उन्हें लौटा दिया गया। फिर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) घर तशरीफ लाए और अपनी साहिबजादी हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया:

"अबू अल्-आस की अच्छे से खातिरदारी करो, लेकिन उनके साथ अकेले में न मिलो क्योंकि मौजूदा हालात में तुम्हारा उनके साथ मिलना जायज़ नहीं है।" कुछ दिनों तक मदीना में ठहरने के बाद अबू अल-आस मक्का की तरफ रवाना हो गए, लेकिन अब उनका मक्का जाना वहां रहने के उद्देश्य से नहीं था। उन्होंने जल्द ही अपने व्यापारिक मामलों को निपटाया और कलिमा-ए-शहादत पढ़ते हुए मदीना की तरफ लौट आए। मदीना पहुंचकर उन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की खिदमत में इस्लाम कबूल कर लिया। इस पर आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु को बिना किसी नए निकाह के अबू अल-आस की तरफ लौटा दिया, यानी अब उन्हें इजाज़त दे दी कि वे उनकी बीवी के तौर पर रह सकती हैं। कुछ रिवायतों में यह भी आता है कि उस वक्त हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु और अबू अल-आस का दोबारा निकाह पढ़ा गया था, लेकिन पहली रिवायत ज्यादा मजबूत और सही है।

(सिरत ख़ातमन नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 670-671)

हज़रत अबू अल्-आस रज़ियल्लाहु अन्हु का व्यापारिक कारोबार मक्का में था, इसलिए वे मदीना में कयाम नहीं कर सकते थे। इस्लाम कबूल करने के बाद, उन्होंने हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से इजाज़त लेकर मक्का वापस लौट गए। मक्का में रहने की वजह से उन्हें गज़वात में शिरकत का मौका नहीं मिल सका। सिर्फ एक सुरिया में, जो दस हिजरी में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की सरपरस्ती में भेजा गया था, उसमें उन्होंने हिस्सा लिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने यमन से वापसी के दौरान उन्हें यमन का आमिल बनाया। हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हु के आठ हिजरी में इंतकाल के बाद, अबू अल-

आस रज़ियल्लाहु अन्हु भी ज्यादा समय तक जीवित नहीं रहे और बारह हिजरी में उनका इंतेकाल हो गया।

(सिरत अल् सहाबा, खंड 4, पृष्ठ 491, दारुल ईशात, कराची)

(ओसोदुल ग़ाबा, खंड 6, पृष्ठ 182-183, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

(असदुल ग़ाबा, खंड 7, पृष्ठ 132, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

गज़वा बनु लहयान का वर्णन मिलता है।

यह नाम लिहयान और लहयान दोनों तरह आता है।

(सिरत ख़ातमन नबिय्यीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 677, हाशिया)

बनू लहयान, बनू हुज़ैल की एक शाखा थे। मक्का से तीन मंज़िलों पर वादी असफान थी, जिसके उत्तर-पूर्व में पांच मील की दूरी पर वादी गुरान में बनू लहयान रहते थे।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 30, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

(फरहंग सिरत, पृष्ठ 200, 219, जवार एकेडमी, कराची)

गज़वा बनू लहयान के बारे में मतभेद है कि यह किस महीने और साल में हुआ। आलिमा इब्न साद के मुताबिक, यह गज़वा रबीउल-अव्वल 6 हिजरी के बिल्कुल आरंभ में हुआ।

मुहम्मद बिन उमर के मुताबिक, रजब 6 हिजरी में।

आलिमा इब्न इसहाक के मुताबिक, यह गज़वा गज़वा बनू क़ुरैज़ा के छह महीने बाद, जुमादा-उल-ऊला 6 हिजरी में हुआ।

आलिमा हाकिम ने इसे शाबान का गज़वा लिखा है।

आलिमा इब्न हज़्म ने इसे पांच हिजरी, आलिमा ज़हबी ने छह हिजरी, और कुछ सिरत लेखकों ने इसे चार हिजरी का गज़वा लिखा है।

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 30-31, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

(सिरत-उन-नबी इब्न हिशाम, पृष्ठ 663, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो निष्कर्ष निकाला है, उसमें इसे जुमादा-उल-ऊला 6 हिजरी, यानी सितंबर 627 ईस्वी का गज़वा लिखा है।

आप लिखते हैं:

"गज़वा बनू लहयान की तारीख़ के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है।

इब्न साद ने इसे रबीउल-अव्वल 6 हिजरी में बयान किया है, परंतु इब्न इसहाक और तबरी ने स्पष्ट किया है कि यह जुमादा-उल-ऊला 6 हिजरी में हुआ था।"

आप रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं: "मैंने इस जगह इब्न इसहाक की पैरवी की है," यानी उनके अनुसार वह सही है। "वल्लाहु आलम।"

(सिरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए., पृष्ठ 674, 676)

ग़ज़वा-ए-बनू लहयान का परिप्रेक्ष्य हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सहाबा-ए-रजीअ के दर्दनाक वाक़े का हवाला देकर वर्णन किया कि :

"इस अवसर पर दस मासूम मुसलमान, जो इस्लाम के शांतिपूर्ण प्रचार के लिए भेजे गए थे, बड़ी बेरहमी और धोखे से क़त्ल कर दिए गए थे। और इस सारे फितने की जड़ में बनू लहयान का हाथ था, जो उस समय मक्का और मदीना के बीच वादी-ए-गुरान में आबाद थे। स्वाभाविक रूप से, यह वाक़या रसूल-ए-अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के लिए गहरे दुख का कारण बना। और चूंकि बनू लहयान का रवैया अब भी वैसा ही दुश्मनी और ग़लतफहमी भरा था, और इस बात का अंदेशा था कि वे मुसलमानों के खिलाफ़ कोई और फितना न खड़ा कर दें, इसलिए आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने प्रशासनिक दृष्टि से उचित समझा कि उन्हें कुछ हद तक सबक सिखाया जाए, ताकि भविष्य में मुसलमान उनके फितनों से सुरक्षित रह सकें।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए., पृष्ठ 674-675)

इसीलिए रसूल-ए-पाक (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत इब्न-ए-उम्म-ए-मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु को मदीना का नायब मुक़र्रर किया और बनू लहयान को सबक सिखाने के लिए अभियान पर निकले। आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अपने साथ दो सौ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु और बीस घोड़े लेकर मदीना से उत्तर की ओर शाम के रास्ते पर रवाना हुए, जबकि बनू लहयान मदीना के दक्षिण में हिजाज़, मक्का के रास्ते के करीब रहते थे। उत्तर की ओर जाने का कारण यह था कि आप बनू लहयान पर अचानक हमला करना चाहते थे ताकि वे हमले की ख़बर सुनकर भाग न सकें। इस उद्देश्य के लिए आपने ऐसा रास्ता चुना जो आम तौर पर इस्तेमाल नहीं होता था। तेज़ी से सफर करते हुए आप बनू लहयान की बस्ती गुरान पहुँचे, जहाँ आपके सहाबा शहीद हुए थे। वहाँ आपने शहीद सहाबा के लिए दुआएँ कीं। बनू लहयान को जब आपके आने की ख़बर हुई, तो वे पहाड़ों की चोटियों की ओर भाग गए। इस वजह से उनमें से कोई भी पकड़ा नहीं गया।

(उद्धारित सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 30, दारुल कुतुब इल्मिया, बैरूत)

(अल-रहीक अल-मख्तूम, पृष्ठ 284)

आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने वहाँ एक या दो दिन क़याम किया और हर तरफ़ दस्ते भेजे, लेकिन कोई पकड़ में नहीं आया। इस यात्रा में जब आप उस स्थान पर पहुँचे जहाँ आपके सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद हुए थे, तो आप पर गहरी भावुकता छा गई और आपने शहीदों के लिए बड़ी तड़प और विनम्रता से दुआ माँगी।

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए., पृष्ठ 675)

फिर लिखा है कि जब बनू लहयान पर अचानक हमले का इरादा उनके पहाड़ों पर भाग जाने की वजह से पूरा नहीं हुआ, तो आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) उस्फ़ान तक गए ताकि मक्का वाले समझें कि आप मक्का आने वाले हैं। इसके बाद आप अपने सहाबा के साथ उस्फ़ान चले गए। इब्न इसहाक़ के मुताबिक, आपने दो घुड़सवार भेजे और इब्न साद के मुताबिक़, आपने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को दस घुड़सवारों के साथ भेजा, ताकि क़ुरैश उनके बारे में सुनें और उनसे डर जाएँ। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु क़ुराअ-उल-ग़मिम तक गए, जो उस्फ़ान से आठ मील की दूरी पर एक वादी है, और फिर वापस आ गए। इसके बाद रसूल-ए-पाक (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मदीना वापसी का सफर शुरू किया और चौदह दिन बाहर रहने के बाद वापस आ गए।

(उद्धारित सब्लुल् हुदा वल् रिशाद, खंड 6, पृष्ठ 30, दारुल कुतुब इल्मिया, 1993)

(फ़रहंग-ए-सीरत, पृष्ठ 243, ज़वार अकैडमी, कराची)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब लिखते हैं :

"वापसी के सफर के दौरान, आपने एक दुआ की, जिसे बाद में मुसलमान अपने महत्वपूर्ण सफरों से लौटने पर आमतौर पर पढ़ा करते थे। वह दुआ यह है : 'आइबूना ताइबूना आबिदूना साजिदूना लिरब्बिना हमिदूना।

अर्थात : हम अपने रब की ओर लौटने वाले हैं। उसी की ओर झुकने वाले, उसी की इबादत करने वाले, उसी के सामने सजदा करने वाले और अपने रब की तारीफ के गीत गाने वाले।'" रसूल-ए-पाक (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) अपने बाद के सफरों में भी यह दुआ अक्सर किया करते थे।

और कभी-कभी वह उसके साथ ये शब्द कहता था :

صَدَقَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَنَصَرَ عَبْدَهٗ وَهَزَمَ الْاَحْزَابَ وَحْدَهٗ۔

"अर्थात, 'हमारे ख़ुदा ने अपना वादा पूरा किया और अपने बंदे की मदद की और दुश्मन की फ़ौजों को अपने दम से परास्त कर दिया।'"

यह दुआ, जो ग़ज़वा बानू लहयान के संदर्भ में अहल-ए-सीरत ने बयान की है और मुहद्दिसीन ने भी इसकी पुष्टि की है, अपने भीतर एक विशेष भावना रखती है। इस दुआ के अध्ययन से उन जज़्बात का अंदाज़ा लगाया जा सकता है, जो उस अशांत समय में हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़िदाहु नफ़्सी के पाक दिल में मौजूद थे और जिन्हें आप अपने सहाबा के दिलों में पैदा करना चाहते थे। इस दुआ में यह दर्द छुपा है कि दुश्मन की तरफ़ से जो रुकावट मुसलमानों की इबादत और इस्लाम की शांति पूर्ण तबलीग़ के रास्ते में

डाली जा रही है, अल्लाह तआला उसे दूर करे। और जितना अल्लाह ने इस रुकावट को दूर किया है, उस पर शुक्राने का गीत गाया गया है। इसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे कोई व्यक्ति अपने पसंदीदा काम में मग्न हो और अचानक कोई दूसरा व्यक्ति उसके काम में खलल डाल दे, लेकिन कुछ समय बाद अल्लाह के फ़ज़ल से वह रुकावट दूर हो जाए और वह व्यक्ति फिर अपने पसंदीदा काम में मशगूल हो सके। ऐसे मौके पर जो भावनाएं उस व्यक्ति के दिल में उठेंगी, वही इस दुआ में छिपी हुई हैं। क्योंकि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं :

"हम इस सफ़र की अस्थाई रुकावट से आज़ाद होकर फिर उस स्थिति में लौट रहे हैं, जिसमें हम अपने ख़ुदा की याद में समय बिता सकें और उसकी हम्द के गीत गाने का मौका पा सकें। हां, वही ख़ुदा, जिसने पहले भी कई मौकों पर हमें दुश्मनों के फ़ितने से बचाकर अमन बख़्शा है। यह भावना कितनी मुबारक, कितनी दिलकश और कितनी शांतिपूर्ण है!"

लेकिन अफ़सोस कि इसके बावजूद कुछ दुश्मन-ए-इस्लाम आपत्ति से बाज़ नहीं आते और यही कहते रहते हैं कि हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा का असली मकसद आक्रमक युद्ध और दुनिया तलब थी।

(सिरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए., पृष्ठ 675-676)

फिर एक सरिया सरिया ज़ैद बिन हारिसा यह सरिया जमादी उल् आखिर 6 हिजरी में हुआ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्होको बनू सालेबा बिन सअद की तरफ़, तरफ़ मक़ाम की ओर भेजा। तरफ़ बनू सालेबा के एक कुएं का नाम है, जो इराक के रास्ते में मदीना से 36 मील दूर है। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्होपंद्रह आदमियों के साथ निकले। जब वह तरफ़ पहुंचे, तो वहां ऊंटों और बकरियों को अपने कब्जे में ले लिया। वहां मौजूद बद्दू डर गए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी ओर आ गए हैं और वे वहां से भाग निकले। हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो जानवरों को हांकते हुए मदीना लौट आए। बनू सालेबा के लोग इन सहाबा की तलाश में निकले, लेकिन उन्हें पकड़ नहीं सके। सहाबा बीस ऊंट लेकर आए। यह अभियान चार रातों तक जारी रहा, लेकिन लड़ाई की नौबत नहीं आई। इस सरिया में मुसलमानों का नारा "अमित अमित" था।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , खंड 6, पृष्ठ 87, दारुल कुतुब अल्-इल्मिया, बैरूत)

बाकी इंशाअल्लाह आगे।

आजकल दुनिया के हालात सभी जानते हैं। शाम में जो हालात उभरे हैं, वे अभी स्पष्ट नहीं हैं। कहने को तो एक ज़ालिम ज़ालिम हुकूमत खत्म हुई है, लेकिन दुआ करें कि आने वाली हुकूमत भी इंसाफ़ से काम लेने वाली हो। अल्लाह तआला अहमदियों को अपनी हिफ़ाज़त में रखे।

और दुआओं की गुज़ारिश है।

यह आने वाले कहते तो बहुत हैं कि हम इंसाफ करेंगे, लेकिन आमतौर पर यही देखा गया है कि जब ताकत मिल जाती है तो कहते कुछ हैं और करते कुछ और। अल्लाह तआला उन इलाकों के अहमदियों को अपनी हिफाज़त में रखे। विश्लेषक लिखते हैं कि आम जनता ज़ुल्म खत्म होने पर खुशियाँ मना रही है, लेकिन आगे क्या होगा इसका कुछ पता नहीं। इसी तरह इस्राईल भी इन इलाकों पर बिना वजह हमला कर रहा है।

बाहरी तौर पर इस्लामी दुनिया के खिलाफ उनके इरादे खतरनाक लगते हैं और इस लिहाज से कोई भी मुल्क सुरक्षित नहीं है। पाकिस्तान के लिए भी दुआ करें, ईरान के लिए और बाकी मुल्कों के लिए भी। अल्लाह तआला मुसलमानों को अक़्ल और समझ दे, और उनके अंदर से फिरक़ापरस्ती और हुकूमत की हवस खत्म हो जाए और वे एक हो जाएँ। अगर ऐसी हरकतें मुसलमानों की तरफ से जारी रहीं, तो फिर अल्लाह तआला ऐसे ज़ालिमों की कैसे मदद कर सकता है, जो अपने ही लोगों को मार रहे हों? बहरहाल, बहुत दुआ करें।

अल्लाह तआला हर अहमदी को उनके शर से महफूज़ रखे। अहमदी न तो इन नाम-निहाद मुसलमानों के हाथों सुरक्षित हैं और न ही उनके जो मुसलमानों के खिलाफ हैं।

अल्लाह तआला रहम फ़रमाए और हमें हर लिहाज से अपनी हिफाज़त में रखे।

इसी तरह,दुनिया में आजकल तूफान भी बहुत आ रहे हैं। हाल ही में मायोट (Mayotte) में तूफान आया। वहाँ भी अहमदी मौजूद हैं और अल्लाह तआला के फज़ल से सुरक्षित हैं और जमाअत भी वहाँ सेवा कर रही है, जिसे वहाँ की हुकूमत ने भी सराहा है। जहाँ लोग खाने को मुँह मांगे दामों में बेच रहे हैं और भूखों को खाना नहीं मिल रहा, वहाँ जमाअत अल्लाह तआला के फज़ल से सेवा कर रही है और खाना खिला रही है।

लेकिन दुआ करें कि अल्लाह तआला इन द्वीपों को प्राकृतिक आपदाओं से महफूज़ रखे।

इसके बाद, नमाज़ के बाद, मैं जनाज़े पढ़ाऊँगा।

पहला जनाज़ा अमीर हसन मर्डानी साहिब शहीद का है। यह दुर मुहम्मद साहिब, नुसरताबाद (ज़िला मीरपुर खास) के बेटे थे। हाल ही में उन्हें शहीद कर दिया गया।

इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन।

मस्जिद से घर जा रहे थे। फायरिंग करके उन्हें शहीद कर दिया गया। मरहूम मोसी थे। उनके पसमांदा में वालिदा, अहलिया, दो बेटे और तीन बेटियाँ शामिल हैं। उनके भाई-बहन भी हैं।

तफसील के मुताबिक, अमीर हसन साहिब 13 दिसंबर की सुबह नमाज-ए-तहज्जुद और फज्र की बाजमाअत नमाज़ अदा करने के बाद घर जा रहे थे। उनके बेटे अज़ीज़ तैमूर (उम्र 12 साल) भी साथ थे। मस्जिद और उनके घर के बीच एक सड़क थी। उन्होंने सड़क को जैसे ही पार किया, वहाँ दो नकाबपोश बाइक सवार मौजूद थे।

उन्होंने करीब आकर नाम पूछा और पहचान होने पर फायरिंग कर दी। मरहूम को पाँच गोलियाँ लगीं, जिससे वह मौके पर ही शहीद हो गए।

इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजिऊन। हमलावर मौके से फरार हो गए।

उनके बेटे ने हिम्मत दिखाते हुए जमाअत को घटना की जानकारी दी। मरहूम का परिवार 1937 में खलाफत-ए-सानिया के दौर में अहमदी हुआ था। उनके वालिद ने 1964 में बैअत की थी। मरहूम खेती और सिक्योरिटी गार्ड का काम करते थे।

उन्हें जमाअत की विभिन्न सेवाओं का भी मौका मिला। दूसरा जनाज़ा: मौलाना अब्दुल सत्तार रऊफ साहिब, मलेशिया के मिशनरी, जो 75 साल की उम्र में वफात पा गए।

इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

उनकी जिंदगी और सेवा का भी उल्लेख किया गया।

15 जनवरी 1973 को उन्होंने अहमदियत स्वीकार करने की सआदत पाई। अक्टूबर 1977 में उन्होंने जामिया अहमदिया रबवा में दाखिला लिया और मुबशिर का कोर्स पूरा किया। उन्हें विभिन्न देशों में सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। 1985 में उन्हें इंडोनेशिया में एक मिशनरी के रूप में नियुक्त किया गया। फिर उन्हें फिजी भेजा गया, जहाँ उन्होंने कुछ वर्षों तक सेवा की। इसके बाद वे दोबारा इंडोनेशिया गए और फिर मलेशिया भेजे गए, जहाँ उन्होंने तबलीग़ की। उसके बाद उन्हें वियतनाम में नियुक्त किया गया, जहाँ उन्होंने कुछ वर्षों तक सेवा की। अंततः उन्होंने मलेशिया में सेवा का अवसर पाया और वह बड़े ही सेवा-भाव से जुड़े रहे। उनके परिवार में पत्नी, एक बेटी और तीन बेटे हैं।

उनके जानने वाले लिखते हैं कि वह जमाअत के लिए पूरी तरह से वक्फ थे और जमाअत के सदस्यों को भी कुरबानियों और वक्फ के लिए प्रेरित करते थे। वह बहुत ही प्यार करने वाले और हर किसी की कमजोरियों पर पर्दा डालने वाले इंसान थे। उनकी तबलीग़ी कोशिशों से कई लोगों को जमाअत में शामिल होने का अवसर मिला। पैग़ंबर हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से उन्हें बेहद मोहब्बत थी। जब भी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का ज़िक्र होता, उनकी आँखों में आँसू आ जाते। जब भी उन्हें दूसरे देशों में जाकर जमाअत की सेवा के लिए कहा जाता, तो वह अपनी पत्नी और बच्चों को पीछे छोड़कर बिना किसी चिंता

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 30 January 2025 Issue No. 5

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

के रवाना हो जाते और हर समय जमाअत के लिए क़ुरबानी देने को तैयार रहते थे। अल्लाह तआला मरहूम पर मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, उनके दर्जात बुलंद करे और उनके बच्चों को भी यह नेकियाँ जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

(अल्-फ़ज़्ल् इंटरनेशनल, 10 जनवरी 2025, पृष्ठ 2-6)

★ ★ ★

सदर अंजुमन अहमदिया, अंजुमन तहरीक-ए-जदीद, अंजुमन वक़्फ़-ए-जदीद क़ादियान के विभाग में बतौर ग्रेड दर्जा चहारुम बराए माली/केयरटेकर/चौकीदार/बावर्ची/नानबाई के लिए शर्ते

(1) अभ्यर्थी की आयु 40 वर्ष से ज़ायद और 18 वर्ष से कम न हो।
(2) अभ्यर्थी की तालीम की कोई शर्त नहीं है जबकि पढ़े लिखे अभ्यर्थी को प्राथमिकता दी जाएगी।
(3) जन्म प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना ज़रूरी होगा।
(4) इस ऐलान के बाद 2 माह के अंदर जो निवेदन प्राप्त होंगी उन्हीं पर ग़ौर होगा।
(5) वही अभ्यर्थी ख़िदमत के लिए जाऐंगे जो मर्कज़ी कमेटी बराए भर्ती कारकुनान के इंटरव्यू में सफल होंगे।
(6) इंटरव्यू में सफलता की सूरत में अभ्यर्थी को नूर हस्पताल क़ादियान से चिकित्सा परीक्षण करवाना होगा और केवल वही अभ्यर्थी ख़िदमत के योग्य होंगे जो नूर हस्पताल के तिब्बी बोर्ड की रिपोर्ट के मुताबिक़ सेहतमंद और तंदरुस्त होंगे।
(7) स्लैक्शन की सूरत में अभ्यर्थी को क़ादियान में अपनी रिहायश का इंतेज़ाम स्वयं करना होगा।
(8) क़ादियान आने जाने का सफ़र ख़र्च अभ्यर्थी के अपने ज़िम्मा होंगा।
(नोट : लिखित परीक्षा और इंटरव्यू की तिथि से अभ्यर्थी को बाद में अवगत किया जाएगा।)

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें।
नज़ारत दीवान सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान पिन कोड 143516
मोबाइल : 09682627592, 09682587713, दफ़्तर01872-501130
E-mail: diwan@qadian.in

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा)
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9 00 बजे से रात 11 00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

दारुस्सनाअत कादियान
(Ahmadiyya Vocational Training Centre)
में वर्ष 2025-2026 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing
Electrician
Welding
Motor Vehicle
AC & Refrigerator
Diesel Mechanic
Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad